मनोज
कॉमिक्स
संख्या 721
मूल्य 6.00
शेरबाज
और दिव्य ज्योति

शेरबाज और दिव्य ज्योति

कथा: बिमल चटर्जी

चित्रांकन : एस. राणा
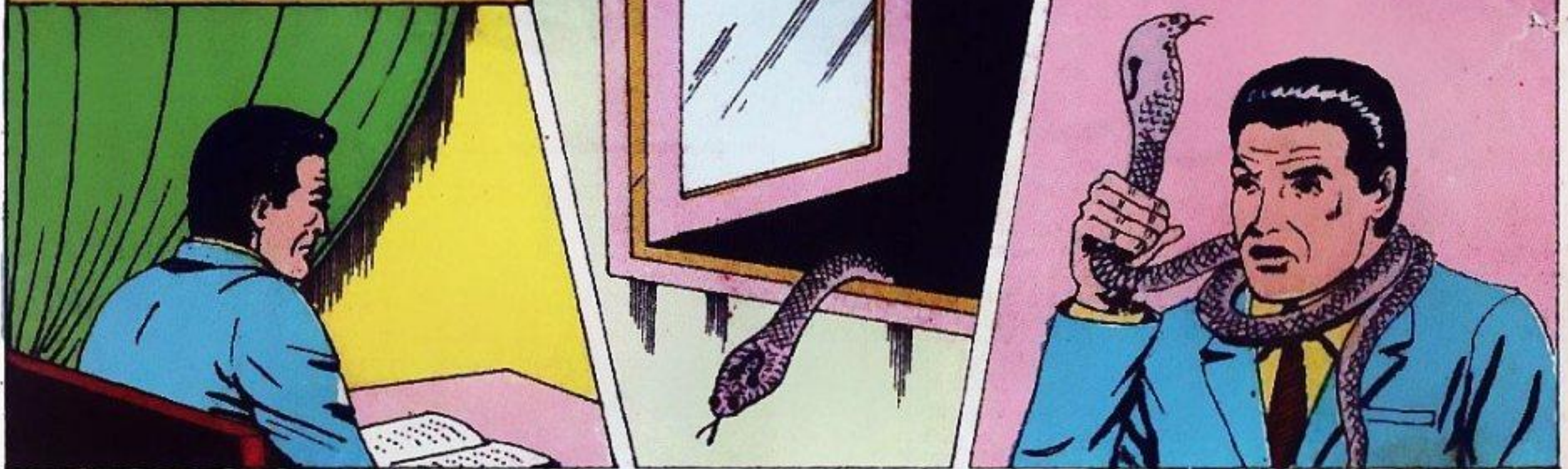
सर्प शेरबाज की आत्मा को लेकर शीतलघाटी की ओर उड़ चला...
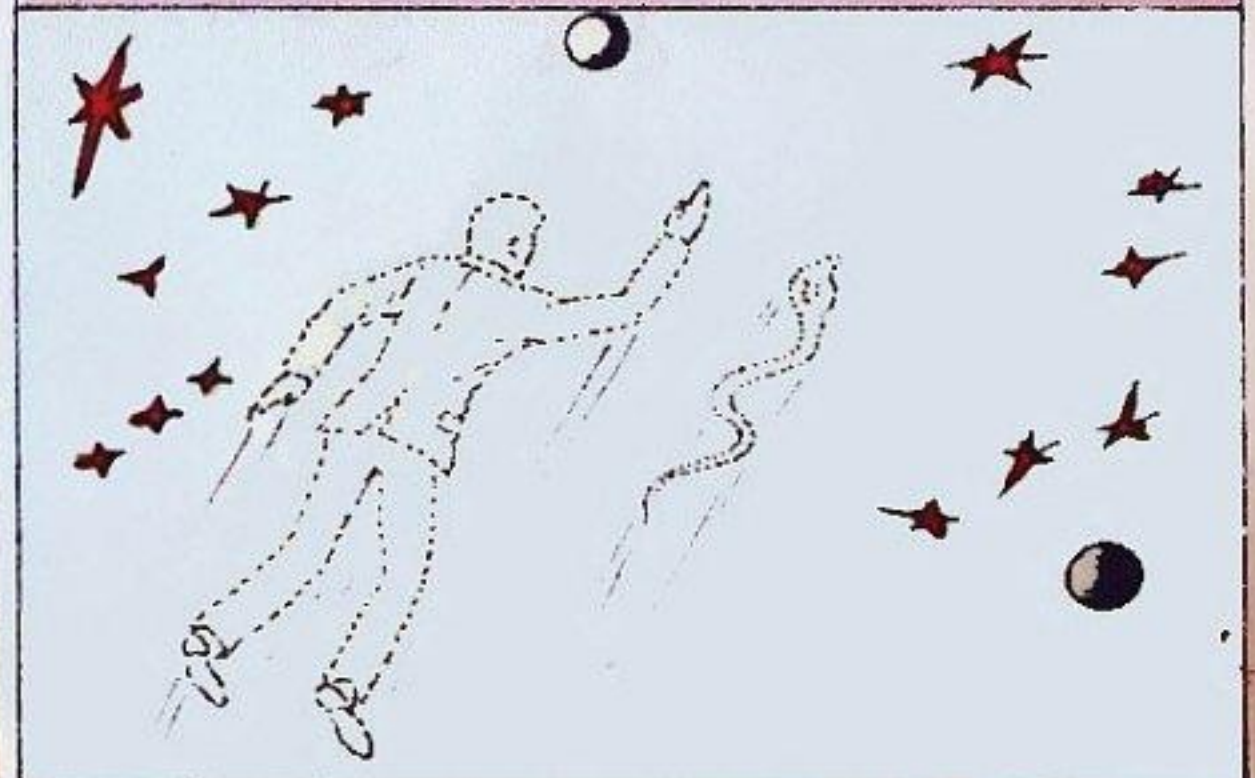
...तथा कुछ देर बाद उसने सर्प नगरी में पहुंचकर उसे राजगुरु चन्द्रमणि के सामने प्रस्तुत किया। राजगुरु चन्द्रमणि ने तब उसकी आत्मा को एक मृत सर्प के शरीर में प्रवेश करा दिया।
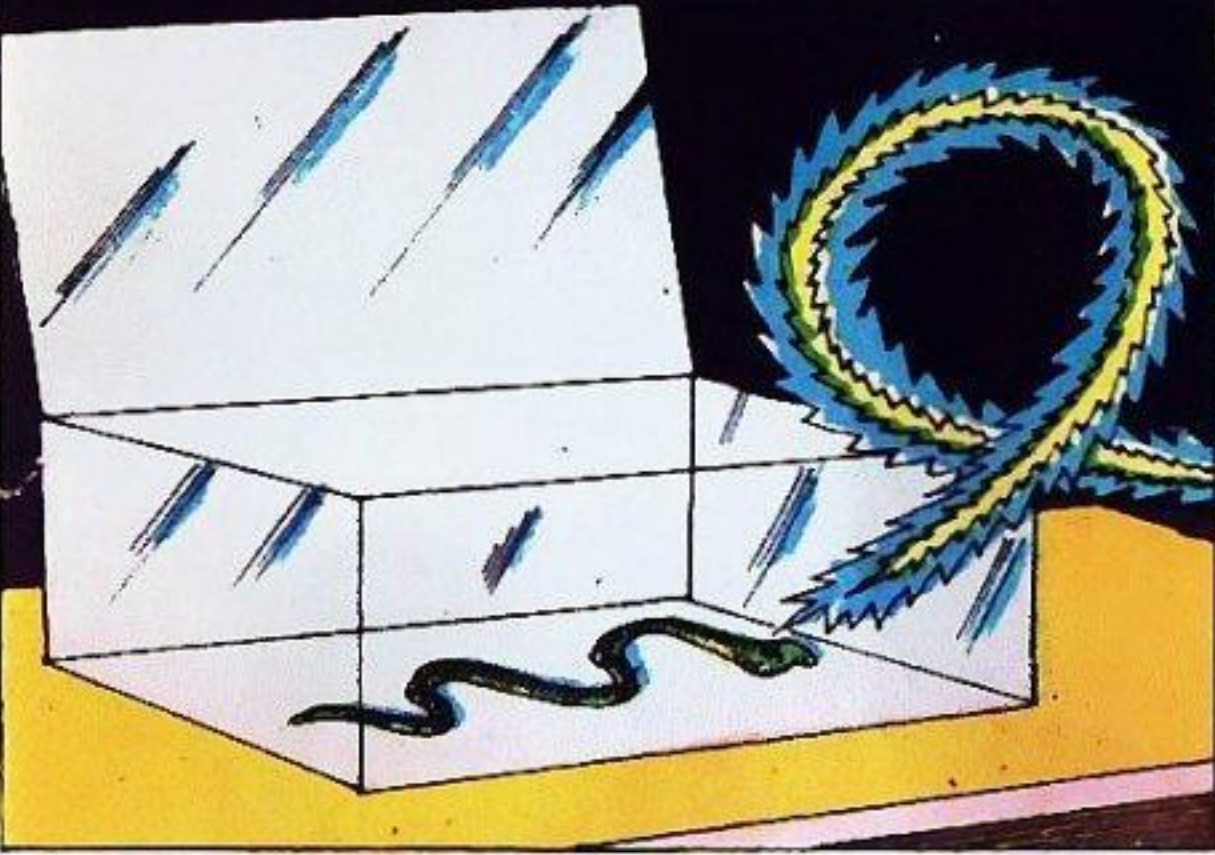
मृत सर्प जी उठा।
ताबूत से बाहर आकर अपना मानव शरीर अपनाइये राजकुमार शेरबाज।
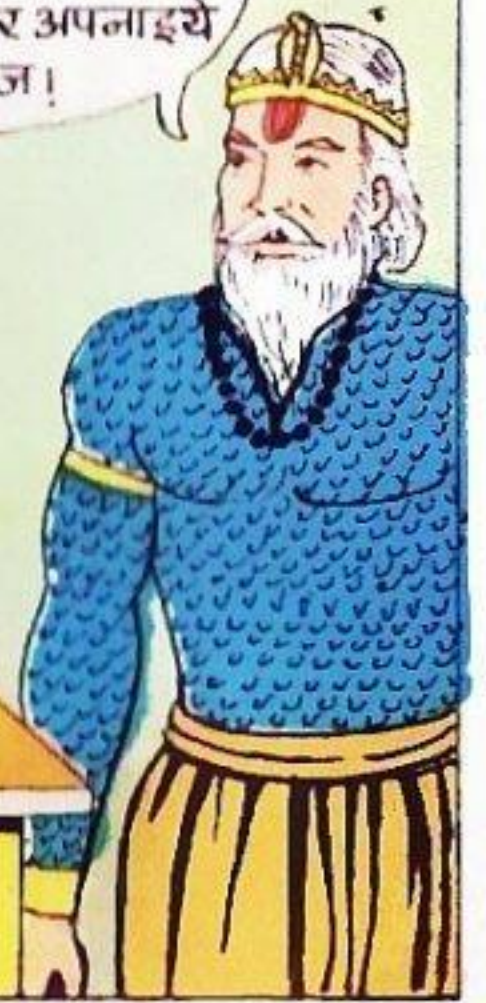
जब शेरबाज अपने मानव शरीर में आ गया तो राजगुरु ने उसे कालचक्र शीशे में उसका पिछला जन्म दिखाया, जिसमें उसे सब कुछ याद आता चला गया।
मुझ पर विश्वास रखो रोमा! हम दोनों को अब कोई भी शक्ति जुदा नहीं कर सकेगी। हम जल्दी ही विवाह करेंगे।

उसे याद आया कि यह सब अस्त देश की रानी जैतूना को पसन्द नहीं आया था...
शेरबाज सिर्फ मेरा है और उससे सिर्फ मैं ही विवाह करूंगी।

...और उसने उसकी प्रेयसी रोमा को मरवाने के लिए अपनी एक शैतानी शक्ति कालिया मसान को भेजा। रोमा ने कालिया मसान का सामना करने की भरपूर कोशिश की...

...लेकिन अन्त में उसके हाथों मारी गई।
हा-हा-हा! आई काम से।
आई... ई... ई...

प्यारे दोस्तो! यहां तक की कहानी आप मनोज कॉमिक्स के गत अंक "शेरबाज और नागदेवता" में पढ़ चुके हैं। अब आगे पढ़ें।

क्या कुछ मालूम हो सका कि वह मानव आत्मा कौन है और उसे सर्पलोक लाने का उनका क्या प्रयोजन है ?
नहीं रानी जी ! इस सम्बन्ध में मालूम करने का हमें समय ही नहीं मिला । यदि आपकी आज्ञा हो तो उसके बारे में मालूम करने की कोशिश की जाये ।

नहीं, यह कार्य अब तुम लोगों के वश का नहीं, क्योंकि उसके बारे में मालूम करने के लिये तुम्हें सर्पलोक में प्रवेश करना पड़ेगा, जो तुम्हारे लिए सम्भव नहीं...

...खैर, तुम जाओ और सर्पलोक के हर द्वार पर गुप्त नजर रखो । उस मानव आत्मा के विषय में हम स्वयं जानकारी हासिल कर लेंगे ।
जो आज्ञा रानी जी !

अनुचर के जाने के बाद—
कालिया मसान प्रकट हो ।

तुरन्त ही—
हुक्म स्वामिनी !
कालिया मसान ! तुम सर्पलोक में जाकर मालूम करो कि कल रात जिस मानव आत्मा को वहां लाया गया था, वह कौन है और उसे लाने का उनका क्या उद्देश्य है ?

जो आज्ञा स्वामिनी !
कह कर कालिया मसान वहां से खोपड़ी समेत अदृश्य हो गया...

...और कुछ देर बाद सर्पलोक की काली पहाड़ी के सामने प्रकट हुआ ।
हुम्म ! द्वार पर सख्त पहरा है । भीतर घुसना आसान काम नहीं है । कोई दूसरा उपाय करना होगा ।

शीघ्र ही—
वाह ! आ गया उपाय । मैं सर्प का रूप धारण करके भीतर प्रवेश कर सकता हूं ।

अगले ही पल वह सर्प का रूप धारण कर द्वार की ओर बढ़ा।
सावधान! वह देखो एक सर्प यहीं आ रहा है।
वह जो कोई भी है, हमारा देशवासी नहीं हो सकता, क्योंकि इस द्वार से कोई भी बाहर नहीं गया था।

पास आने दो, फिर मालूम करेंगे।

रुक जाओ और अपना परिचय दो।

मेरा नाम सूर्यप्रताप है और मैं राजगुरु की आज्ञा से अस्तदेश दुश्मनों का भेद जानने गया था।
लेकिन सर्पलोक से कोई बाहर गया है, इसकी हमारे पास कोई सूचना नहीं है।

मैं गुप्त द्वार से बाहर गया था और यह तो तुम जानते ही हो कि गुप्त द्वार नियत समय पर ही खोले और बंद किये जाते हैं...

... फिर मेरे आवागमन को बहुत ही गुप्त रखा गया है।
ओह! दुश्मन देश से तुम क्या खबर लाये हो?

वह खबर मैं तुम लोगों को नहीं बता सकता। ऐसा राजगुरु जी का आदेश है। वह खबर मैं केवल उन्हें ही दूंगा।
मेरे विचार से हमें इसे जाने देना चाहिए। इसकी कही कई बातें ठीक हैं।

ठीक है। तुम भीतर जा सकते हो।
धन्यवाद!

शुक्र है, आसानी से पीछा छूट गया।

वाह! क्या शानदार नगरी है। परन्तु यहां वह मानव आत्मा कहां मिलेगी? किससे पूछूं उसके बारे में।

लेकिन जब कालिया मसान एक जगह से गुजर रहा था—
अरे शाकी, सुना तुमने, हमारे राजकुमार शेरबाज जीवित हो उठे हैं।
क्या सच?
लेकिन यह सम्भव कैसे हुआ?
???

इनकी बातें सुननी चाहिए। शायद कोई मेरे मतलब की बात निकल आये।

ऐसा राजगुरु चन्द्रमणि जी के कारण सम्भव हो पाया है। सुना है, उन्होंने पृथ्वी के एक देश हिन्दुस्तान के एक शहर से राजकुमार के नये मानव शरीर से उनकी आत्मा को लाकर उनके पुराने मृत शरीर में प्रवेश करा दिया है, जिससे वे पुनः जीवित हो उठे हैं...

...और उन्हें भूत और वर्तमान सबकुछ याद आ गया है।
आहा! फिर तो समझ लो हमारे मुसीबत के दिन खत्म होने वाले हैं।

ठीक कहते हो। राजकुमार ने अस्तदेश की रानी जैतूला को मौत के घाट उतारने का बीड़ा उठा लिया है।
फिर रानी जैतूला की मौत निश्चित समझो।

नहीं, ऐसा कदापि सम्भव नहीं हो सकता। जब तक मैं शेरबाज को अपनी आंखों से जीवित न देख लूं, मुझे इनकी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

और कालिया मसान तेजी से एक तरफ रेंग गया।
यदि शेरबाज जिन्दा है तो इस समय जरूर अपने महल में होगा।

उधर एक सुन्दर महल के...

...एक कमरे में —
हमारा प्रेम अमर है रोमा! तभी तो देवता ने हमें इस जन्म में भी मिला दिया...

...बेशक मैं तुम्हें पिछले जन्म में नहीं पा सका, लेकिन इस जन्म में तुम्हें पाने से मुझे कोई नहीं रोक सकता, लेकिन...
हे शैतानी शक्तियों के देवता! यह तो वास्तव में राजकुमार शेरबाज है।

...मैं तुम्हें वचन देता हूं रोमा! यहां से जाने से पहले मैं रानी जैतूला से तुम्हारी मौत का बदला अवश्य लूंगा। मेरी तलवार उसका खून पीने के लिए लालायित हो रही है...

...मैं आज रात ही उस पिशाचनी को मौत के घाट उतार डालूंगा। यह तुमसे मेरा वायदा रहा रोमा!
अब मुझे एक पल भी न गंवाकर तुरन्त लौटकर स्वामिनी को सारी बात से अवगत करा देना चाहिए।

कालिया मसान उसी समय वापस लौट पड़ा।
द्वार से बाहर निकलते समय फिर वही कहानी दोहरानी पड़ेगी।

द्वार पर —

अरे! तुम इतनी जल्दी फिर बाहर कैसे जा रहे हो?

राजगुरु जी का यही आदेश है...

उसकी यह इच्छा इस जन्म में तो क्या सौ जन्मों में भी पूरी नहीं हो सकेगी।
मैं आपकी शक्ति को जानता हूं स्वामिनी! कहिये, अब मेरे लिए क्या आज्ञा है?

सुनो, जैसे ही शेरबाज हमारे नगर की सीमा में प्रवेश करे, तुम्हें उसे पकड़कर हमारे कदमों में पेश करना है। समझ गए?
समझ गया स्वामिनी।
फिर जैतूला के आदेश पर कालिया मसान खोपड़ी में समाकर अपने यथा स्थान पर निश्चल हो गया।

और उसी रात सर्पलोक के देवता भवन में —
हे इच्छाधारी सर्पों के देवता! आज सर्प राजकुमार शेरबाज सर्पलोक को रानी जैतूला के आतंक से छुटकारा दिलाने के लिये अस्तदेश जा रहा है...

...हे देवता! मेरी तुमसे प्रार्थना है कि दुश्मनों से युद्ध करने के लिए शेरबाज को अपनी दिव्य ज्योति प्रदान कीजिए, ताकि सर्पलोक तुम्हारी असीम कृपा से सुख और शांति की सांस ले सके।

अचानक देवता के दोनों नेत्र प्रज्वलित हो उठे और साथ ही एक गम्भीर वाणी देव भवन में गूंज उठी।
ऐ सच्चे भक्त व सर्पलोक के शुभचिंतक! हमने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली है। सर्प राजकुमार शेरबाज को हमारे सामने करो। हम उसे ऐसी शक्ति प्रदान करेंगे कि वह प्रबल से प्रबल शत्रु को परास्त करने में समर्थ होगा।

देवता की वाणी सुनकर सभी के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे।
राजकुमार शेरबाज! इधर आकर नाग देवता का आशीर्वाद प्राप्त करो।
जी गुरुदेव।

शेरबाज नाग देवता के सामने जाकर खड़ा हो गया। तब नागदेवता के प्रज्वलित नेत्रों से तीव्र प्रकाश निकलकर शेरबाज के सम्पूर्ण शरीर पर पड़ा।
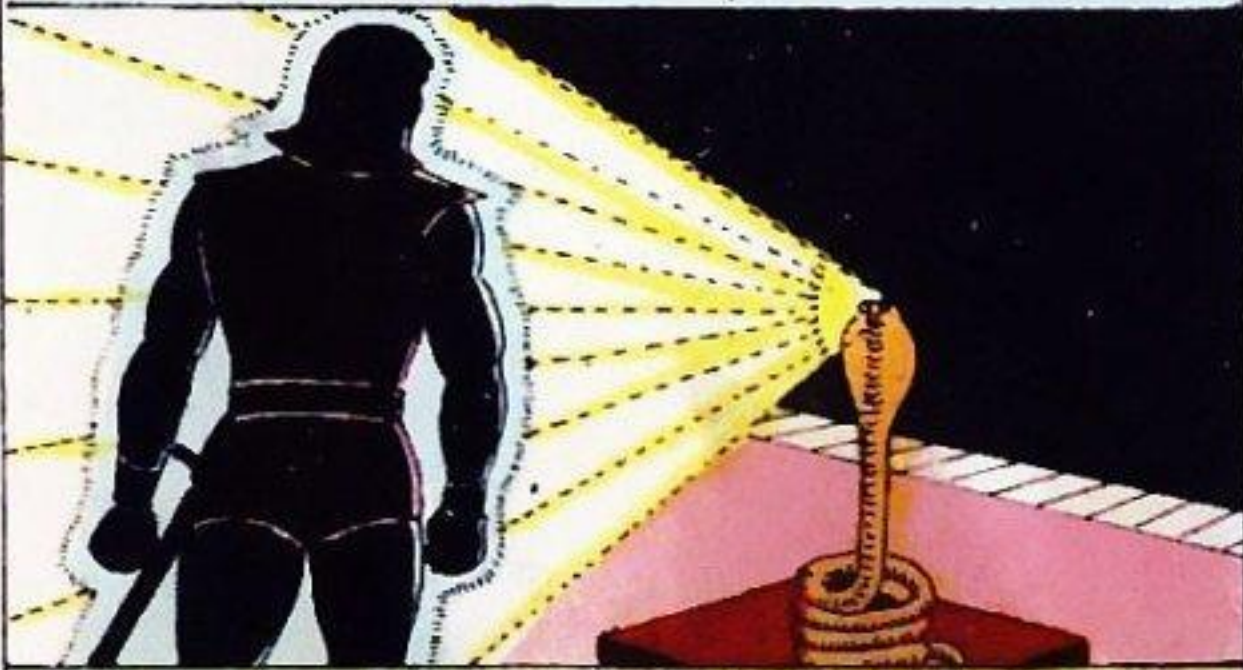
शेरबाज कुछ देर तक उस दिव्य ज्योति में नहाया हुआ चुपचाप खड़ा रहा...

...फिर वह दिव्य ज्योति जैसे आई थी, वैसे ही देवता के नेत्रों में सिमट गई।
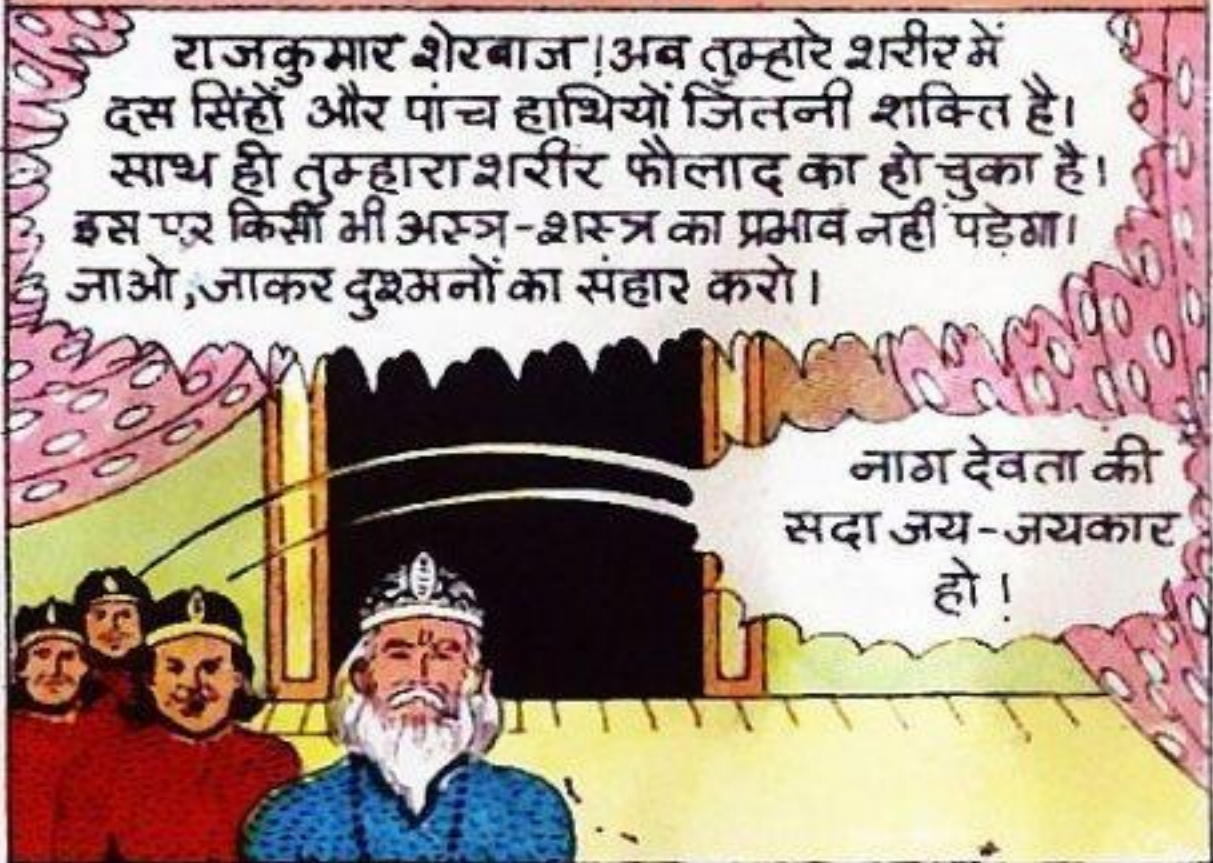
जब नाग देवता के प्रज्वलित नेत्र निस्तेज हो गये।

सर्पलोक के एक द्वार पर—

तब शेरबाज सबसे विदा लेकर घोड़े पर सवार हुआ और अस्तदेश की ओर चल पड़ा।

रानी जैतूला के अनुचर शेरबाज को सर्पलोक से निकलते और अस्त देश की ओर जाते देख चुके थे।

शेरफा! तुम जल्दी से जाकर रानी जी को सूचित करो कि शेरबाज अस्तदेश की ओर रवाना हो चुका है।

ठीक है।

उस अनुचर ने तुरन्त बाज का रूप धारण किया और अस्तदेश की ओर उड़ चला।
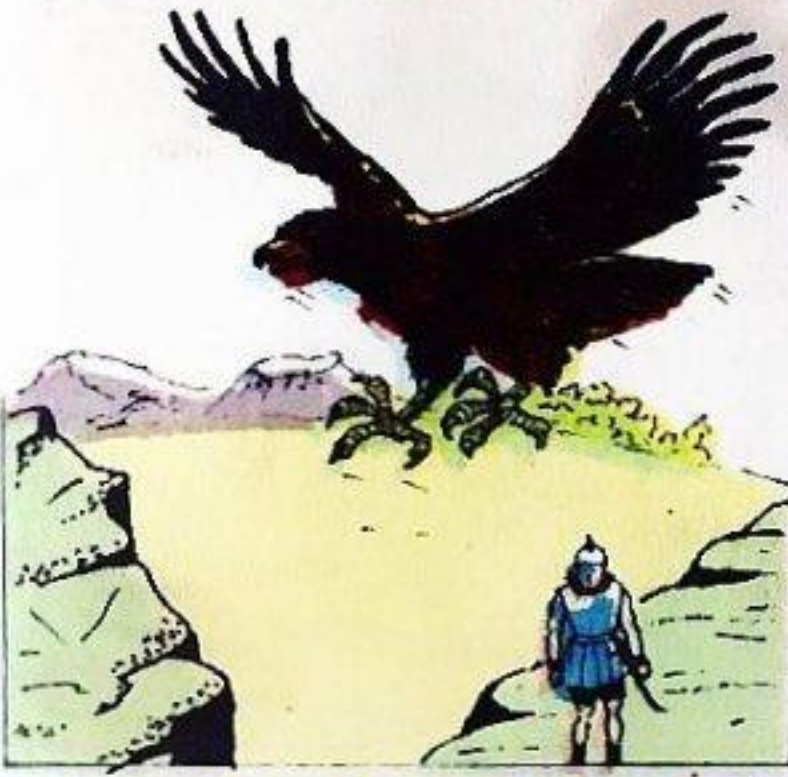
कुछ देर बाद वह अनुचर रानी जैतूला के महल में उसके सामने खड़ा था।
हुम्म! तो शेरबाज हमारी नगरी में आ रहा है।
जी हां रानी जी!

ठीक है, तुम जाओ। हम अपने प्यारे दुश्मन के स्वागत का इन्तजाम स्वयं कर लेंगे।
जो आज्ञा रानी जी!
अनुचर वापस लौट गया।

अनुचर के जाते ही रानी जैतूला ने कालिया मसान की खोपड़ी पर अपनी छड़ी घुमाई।
कालिया मसान, तुरन्त हाजिर हो।

गुलाम हाजिर है स्वामिनी! हुक्म कीजिए।
शेरबाज हमारे देश के लिए रवाना हो चुका है, उसके स्वागत का प्रबन्ध करो।

आप चिन्ता न करें स्वामिनी! अस्त-देश में कदम रखते ही वह आपके कदमों में पड़ा दिखाई देगा।
शाबाश! हमें तुमसे यही उम्मीद है। अब देर न करो, जाओ।

हा-हा-हा!

उधर भोर होने के साथ ही शेरबाज अस्तदेश की सीमा पर पहुंच गया।
अस्त देश की सीमा आ गई। अब घोड़े पर जाना खतरे से खाली नहीं होगा।

अगले ही पल—
यह शरीर ठीक रहेगा। किसी की नजर आसानी से मुझ पर नहीं पड़ पायेगी।

वह रहा शेरबाज! भला सर्प बन कर वह मुझे क्या धोखा देगा?

इस पर तो तलवार का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ रहा। इससे कैसे निपटा जाये।

अचानक एक विचार दिमाग में आते ही शेरबाज ने एक विशाल काय पक्षी का रूप धारण किया...

...और खोपड़ी पर टूट पड़ा।
अब तुम नहीं बचोगे जेतूला के गुलाम।
उफ! तो तुम यूं नहीं मानोगे।

अगले ही पल अपना बचाव करता हुआ वह एक तरफ भागा।
भागकर कहां जायेगा शैतान के गुलाम।

हा-हा-हा! अब अपनी खैर मनाओ मूर्ख।

परन्तु पक्षी रूपी शेरबाज पर उन किरणों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
अरे! यह तो अभी जिंदा है।
हा-हा-हा! मेरा शरीर वज्र का है कालिया मसान, इसलिए मुझ पर तुम्हारे किसी भी आक्रमण का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा...

...यदि हिम्मत है तो अपने घोंसले से बाहर निकलकर मेरा मुकाबला करो।
ओह! अब मैं क्या करूं?

और दूसरे ही पल—
तुम्हारा शरीर कितना ही वज्र का सही, लेकिन मेरे इस फौलादी शिकंजे से तुम आजाद नहीं हो पाओगे शेरबाज!
ओह!

पूरे शरीर पर लोहे की जंजीर लिपटते ही पक्षी रूपी शेरबाज का उड़ना बंद हो गया और वह तेजी से नीचे गिरने लगा।
मुझे मानव शरीर धारण करना पड़ेगा, वरना शायद नीचे गिरकर जीवित नहीं बचूंगा।

शेरबाज ने मानव शरीर धारण कर लिया, इसलिए नीचे गिरने पर वज्र शरीर होने के कारण उसका कोई अनिष्ट नहीं हुआ।
धप्प!
आह!

हा-हा-हा! मर गया होगा साला।

मुझे अभी चुपचाप पड़े रहना चाहिए। जब वह पास आयेगा तो निपटूंगा उससे।
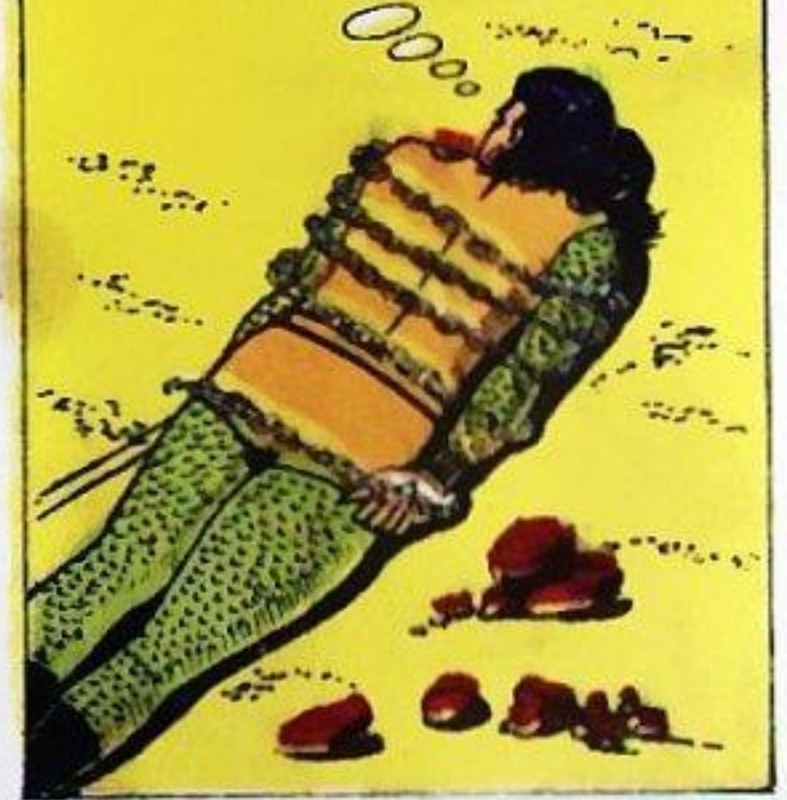
और जब कालिया मसान शेरबाज के निकट पहुंचा —
हैं!
कड़-कड़ाक!
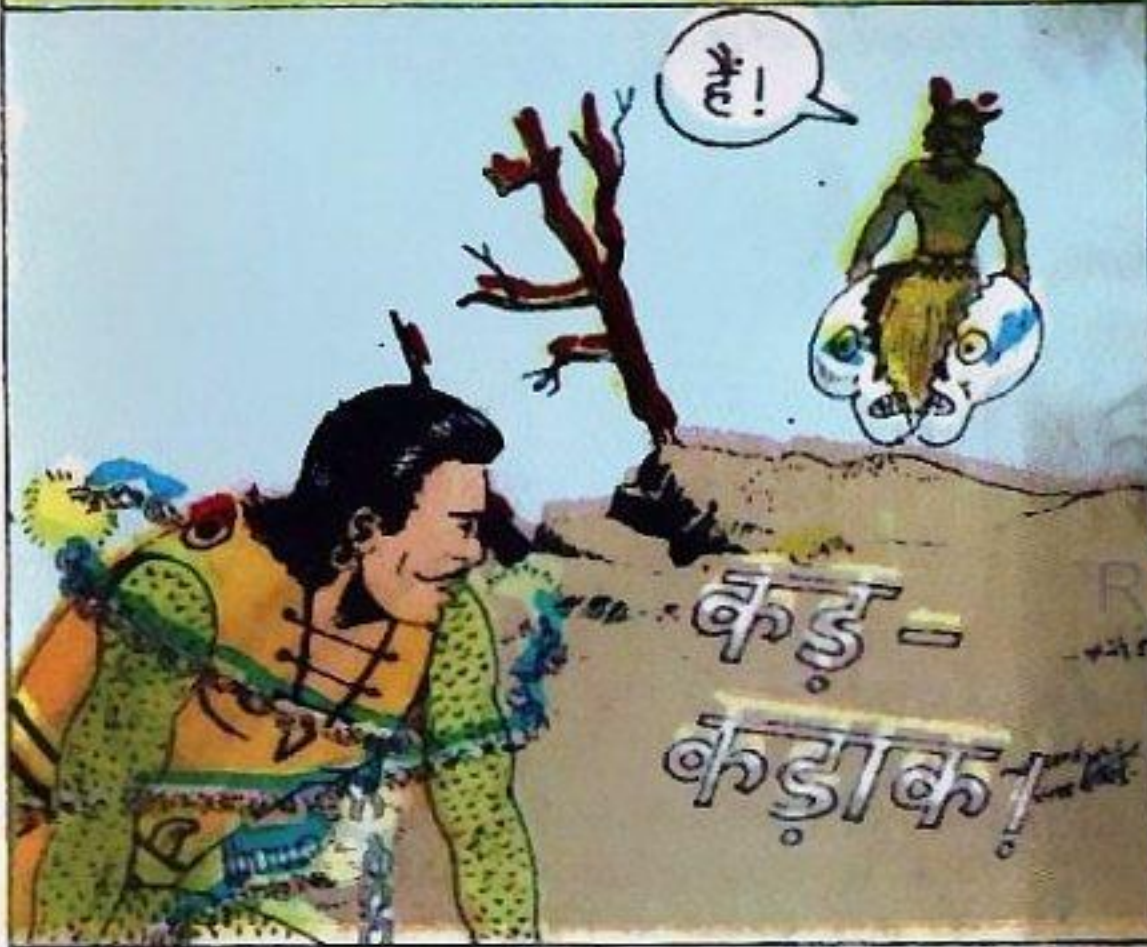
आजाद होने के साथ ही शेरबाज ने बिना एक पल गंवाए लपक कर कालिया मसान की खोपड़ी दबोच ली।
हा-हा-हा! बचकर कहां जाओगे मुर्गी के चूजे।
उफ! छोड़ो मुझे। गुड़प-गुड़प!
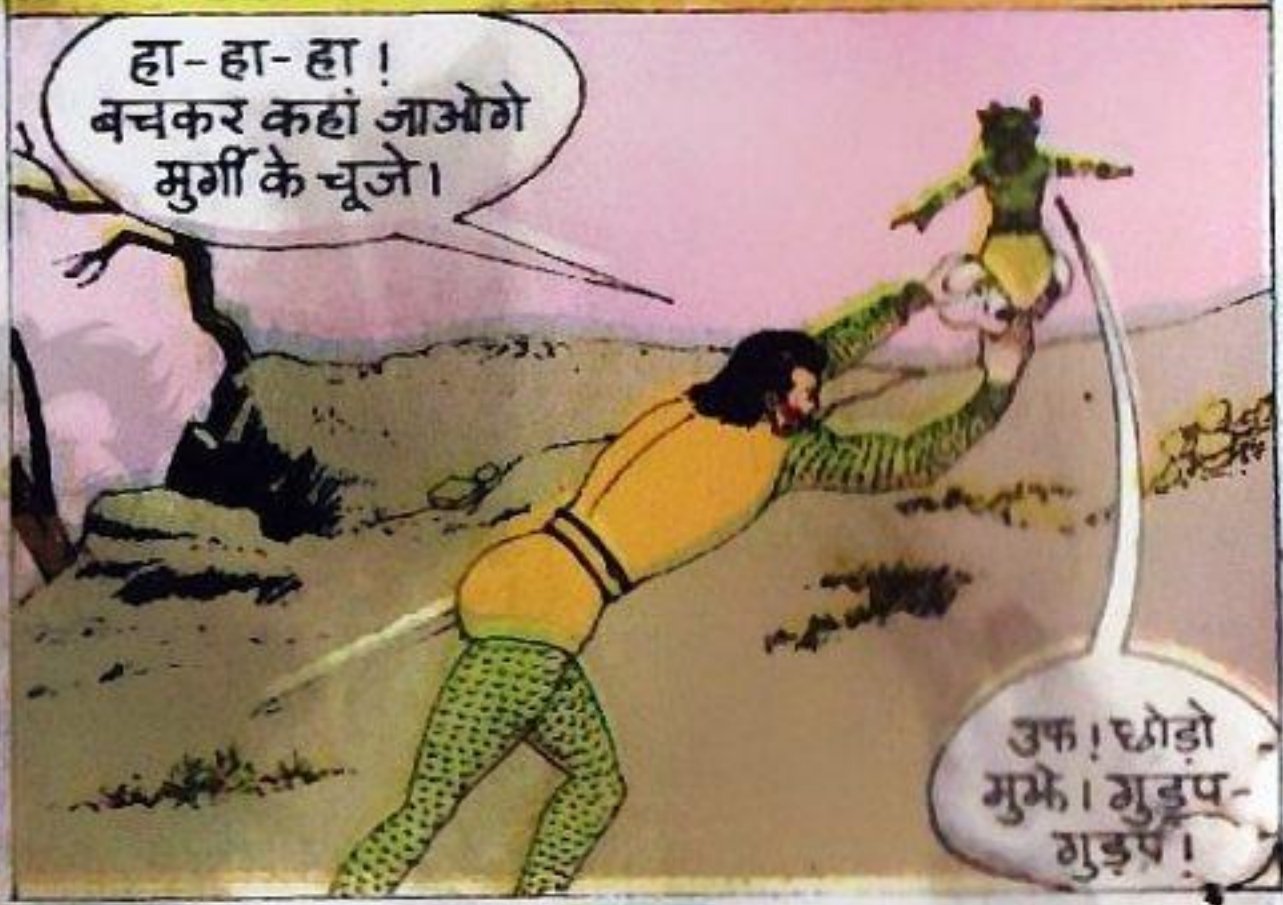
यदि तुझे अपनी जान प्यारी है तो बता, तेरी स्वामिनी के पास तेरे अलावा और क्या-क्या शक्तियां हैं और उसने मेरे स्वागत की क्या-क्या तैयारियां की हुई हैं?
नहीं, मैं कुछ नहीं बता सकता। मैं अपनी स्वामिनी का वफादार गुलाम हूं। गड़प-गड़प।

तब मैं तेरी गर्दन दबाकर इसी समय तुझे दूसरे लोक पहुंचा दूंगा।

स्वामिनी! मेरी मदद करो। मुझे बचाओ।

बचाओऽऽऽ!
ओह ! कालिया मसान के प्राण खतरे में हैं ।

अगले पल —
शेरबाज! तुम कालिया मसान को छोड़ दो। वह तुम्हें मुझ तक पहुंचा देगा। यदि तुमने उसे मार दिया तो फिर जीवन-भर हाथ-पैर पटकने के बावजूद तुम मुझ तक नहीं पहुंच पाओगे ...
...कालिया मसान की मौत के साथ ही मैं अपने देश के समस्त द्वार हमेशा-हमेशा के लिए बंद कर दूंगी।
ओह! यह आवाज!

फिलहाल और कोई चारा नहीं। मुझे जैतूला की बात मान लेनी चाहिए ...

...बस, एक बार वह दुष्टा मेरे सामने आ जाये, फिर मैं उससे अगला-पिछला सारा हिसाब साफ कर लूंगा।
क्या सोचने लगे शेरबाज? जल्दी फैसला करो, वरना कालिया मसान मर जायेगा।

मुझे तुम्हारी बात मंजूर है। लो, मैंने तुम्हारे गुलाम को आजाद कर दिया।
उफ! हफ्फ-हफ्फ! बच गया।

कालिया मसान! तुम आदर सहित राजकुमार शेरबाज को हमारे महल के विशेष कक्ष में ले आओ। हम यहीं उससे समझौता करेंगे।
जो आज्ञा स्वामिनी !

तब जैतूला ने छड़ी घुमाकर दर्पण को प्रकाशहीन कर दिया।

मेरा हाथ पकड़िये राजकुमार शेरबाज! मैं आपको पलक झपकते ही अस्त देश के राजमहल में पहुंचा दूंगा।
हुम्म ! ठीक है !

फिर शेरबाज ने जैसे ही कालिया मसान का हाथ थामा, वह उसे लेकर अस्त देश की ओर उड़ चला और शीघ्र ही —

क्या वह मीनार वाला महल ही तुम्हारी स्वामिनी का निवास स्थान है ?
हां राजकुमार।

अगले पल —

मेरे पीछे आइये राजकुमार !

शीघ्र ही —
स्वामिनी! राजकुमार शेरबाज हाजिर हैं।
रानी जैतूला तुम्हारा स्वागत करती है शेरबाज।

मुझे इसी क्षण का इन्तजार था धूर्त व मक्कार स्त्री! अब मैं तुम्हे जिंदा नहीं छोड़ूंगा।
ही-ही-ही! जरूर कोशिश कर देखो।
???

खचाक!

ही-ही-ही!

हैं। सिर धड़ से फिर जुड़ गया!

हा-हा-हा!

ही-ही-ही! तुम मुझे इस जन्म में तो क्या, सात जन्म लेकर भी नहीं मार पाओगे शेरबाज! क्योंकि मैं अजर-अमर हूं...

...अगर मेरी बात पर विश्वास न हो तो एक बार फिर कोशिश करके देख लो।

???

जरूर कोशिश करके देखूंगा...

हा-हा-हा! बड़ी अजर-अमर बनती थी। अब चिपक गई न फर्श से।

तभी—
ही-ही-ही! मैं अभी जिन्दा हूं शेरबाज!
ओह!

क्यों, अब तो तुम्हें विश्वास हो गया न कि मैं अजर-अमर हूं?
हा-हा-हा! वास्तव में स्वामिनी महान् हैं।

अब मेरी बात ध्यान से सुनो शेरबाज। यदि तुम मेरी दो शर्तों में से किसी भी एक शर्त को पूरा कर दो तो तुम बच सकते हो, वरना तुम्हारी मौत निश्चित है।
क्या शर्तें हैं तुम्हारी?

मेरी दो शर्तों में से एक शर्त यह है कि तुम मुझसे विवाह करके यहीं रह जाओ।
ओह! और दूसरी?

दूसरी शर्त यह है कि तुम मुझे नागदेवता की दिव्य ज्योति प्राप्त करने में मेरी मदद करो...

...अब यह तुम पर निर्भर करता है कि तुम्हें मेरी कौन-सी शर्त मंजूर है।
मुझे तुम्हारी दोनों में से कोई भी शर्त मंजूर नहीं।

एक बार फिर सोच लो शेरबाज! दूसरी अवस्था में तुम्हारी मौत निश्चित है।
मुझे मरना मंजूर है, लेकिन तुम जैसी दुष्टा की घिनौनी शर्त मानना मंजूर नहीं है।

ठीक है, तो कल सुबह तुम्हारी जिंदगी और मौत का फैसला हो जायेगा...

...तब तक मैं तुम्हें एक बार और सोचने का मौका देती हूं।
ओह! यह तो मैं किन्हीं किरणों के पिंजरे में कैद होता जा रहा हूं।

फिर पलक झपकते ही शेरबाज़ किरणों के एक पिंजरे में कैद हो गया।
मैं तुम्हारे इस पिंजरे को तोड़-फोड़कर रख दूंगा। देखो मेरी शक्ति का कमाल!
नहीं शेरबाज, पिंजरे की चमकदार रेखाओं को हाथ मत लगाना, वरना...।

परन्तु तब तक शेरबाज उन्हें पकड़ चुका था।
आऽऽऽ

अगले ही पल शेरबाज बेहोश होकर फर्श पर लुढ़क गया।
चलो, यह भी अच्छा हुआ। अब सुबह तक इसके लिये सोचना नहीं पड़ेगा।

कालिया मसान!
जी स्वामिनी!
अब तुम भी अपने स्थान पर जाकर आराम करो। जरूरत पड़ने पर मैं तुम्हें फिर बुलाऊंगी।
और कालिया मसान अपने विशिष्ट स्थान पर जाकर स्थिर हो गया।

रानी जैतूला ने वहीं रखे एक घण्टे को बजाया।
टन...

तुरन्त एक सैनिक हाजिर हुआ।
क्या हुकम है रानी जी?
सेनापति जोगाल से जाकर कहो कि सुबह वह खेल के मैदान को पूरी तरह तैयार रखे...

...और एक रोचक खेल देखने के लिए नगरवासियों को भी निमंत्रित करे। वह खेल देखने के लिए हम स्वयं भी वहां उपस्थित रहेंगे, जाओ।
जी रानी जी!

अगले दिन सुबह शाही खेल के मैदान में —
शेरबाज़! तुम्हें आखिरी मौका दिया जाता है! बोलो, क्या तुम्हें हमारी दोनों शर्तों में से कोई भी एक शर्त मंजूर है ?
मरते दम तक नहीं!
तो ठीक है। अब तुम अपनी मौत का इन्तजार करो।

योद्धाओ! टुकड़े-टुकड़े कर डालो इस गुस्ताख के।

शेरबाज को घेरे खड़े सशस्त्र योद्धा एक साथ शेरबाज पर टूट पड़े...
खनन...

...लेकिन परिणाम कुछ और ही निकला।
खचाक
आई...

आह!

आह...
कुछ ही देर में तीनों योद्धाओं की लाशें मैदान में पड़ी थीं।

ओह। उसने तो मेरे तीनों शक्तिशाली योद्धाओं को मौत के घाट उतार दिया।
हुर्रे... हुर्रे...!
हो-हो!

रानी जैतूला! तुम्हारी फौज में और कोई योद्धा है, जो मेरा मुकाबला कर सके।

तुम्हारी यह हिम्मत!
इस गुस्ताख पर मस्त हाथी छोड़ो।

तुरन्त ही—
हुम्म! तो अब इन बेगुनाह जानवरों से भी मुकाबला करना पड़ेगा।
-चीं...चीं...

शेरबाज ने अपनी तलवार म्यान में रखी और हाथियों से मुकाबला करने के लिए तैयार हो गया।

हाथियों के करीब आते ही शेरबाज ने एक हाथी की सूंड पकड़ ली और...
-चीं...चीं...चीं...

...अपनी पूरी शक्ति से उसे हवा में घुमाकर दूर उछाल दिया और...
-चीं...चीं...ची...
ओह!
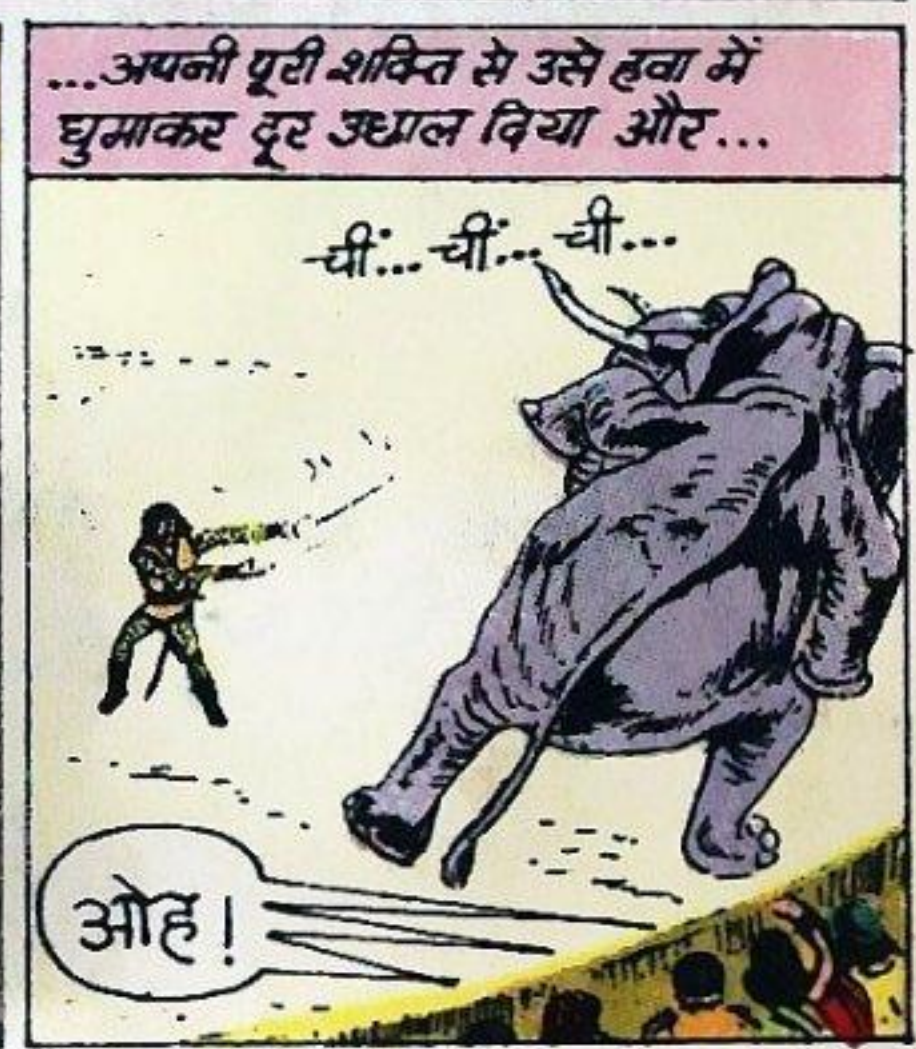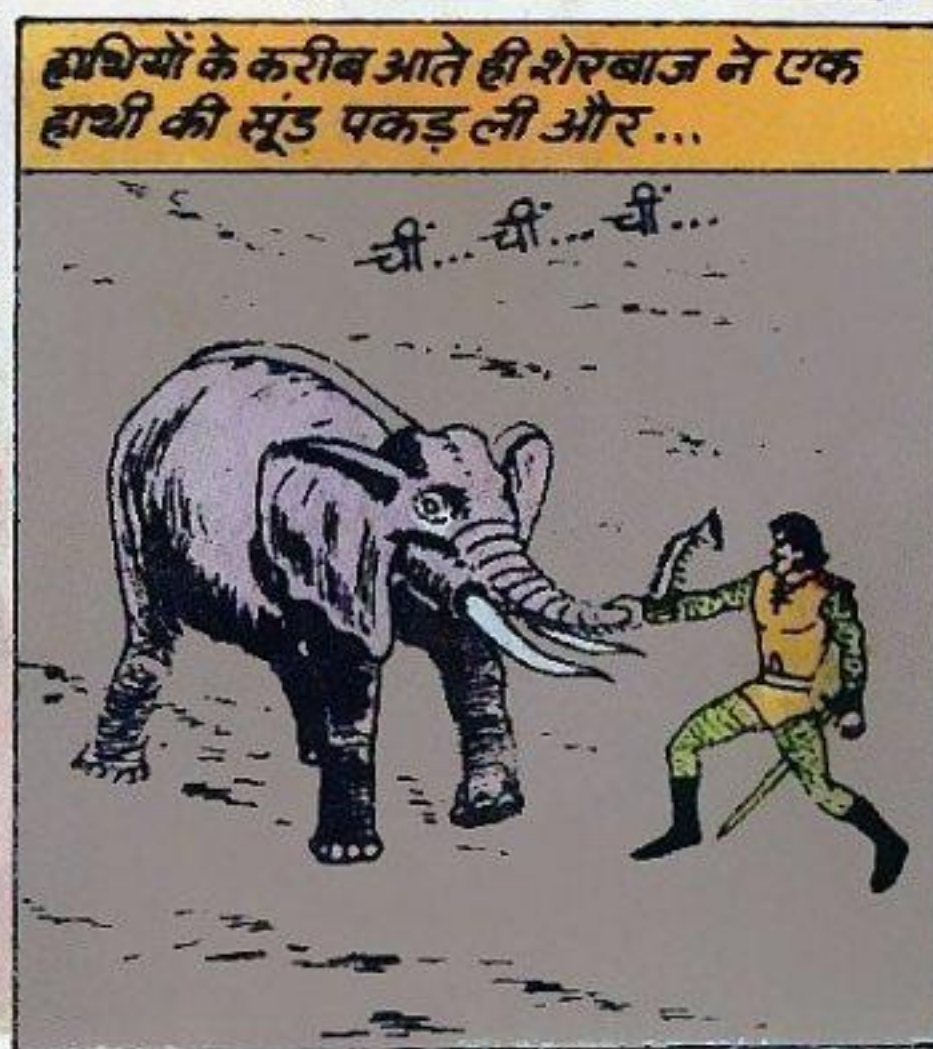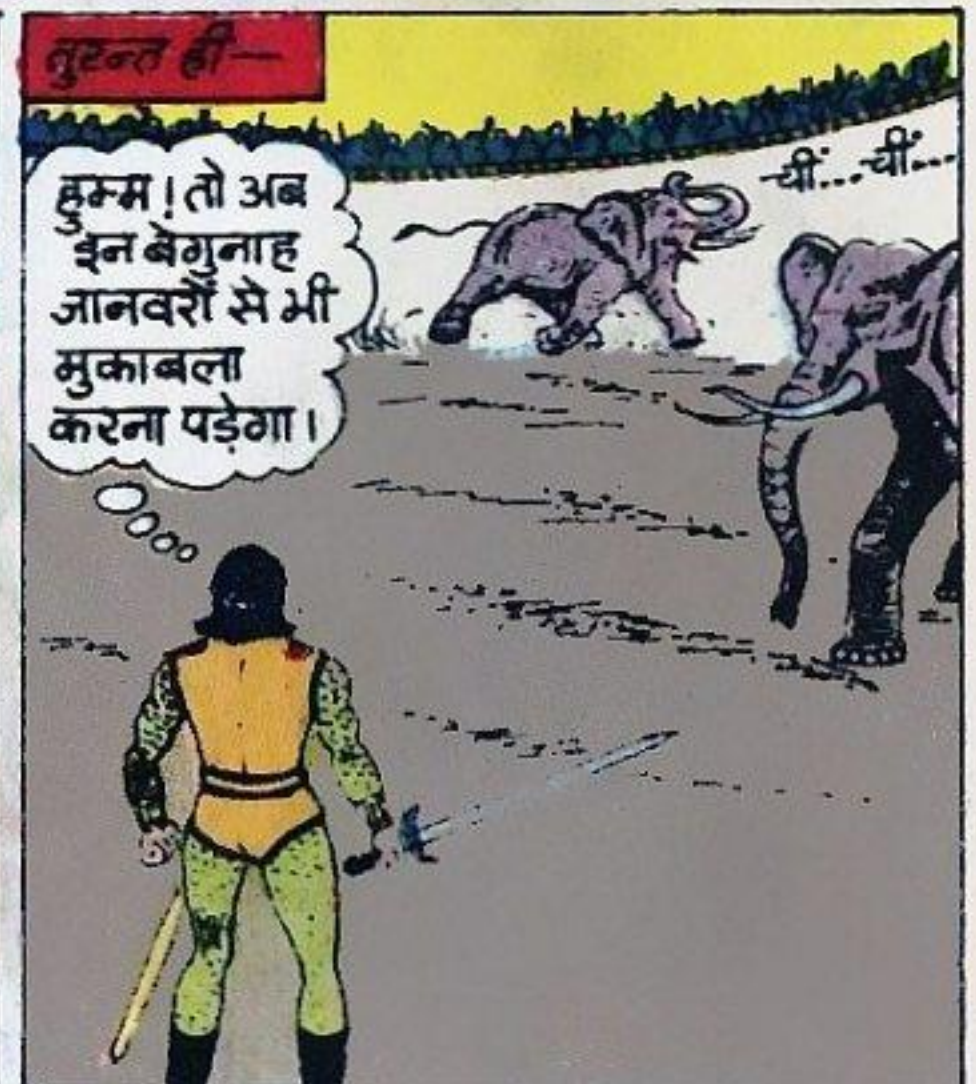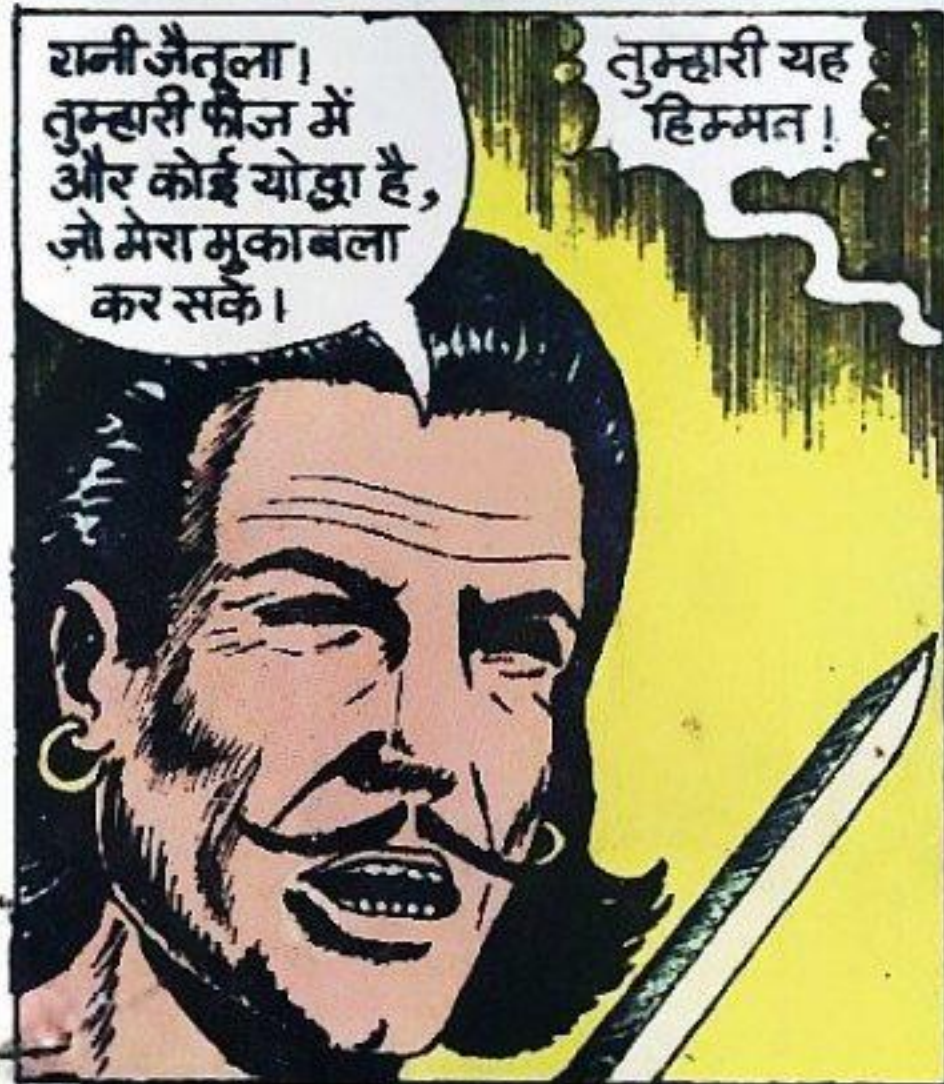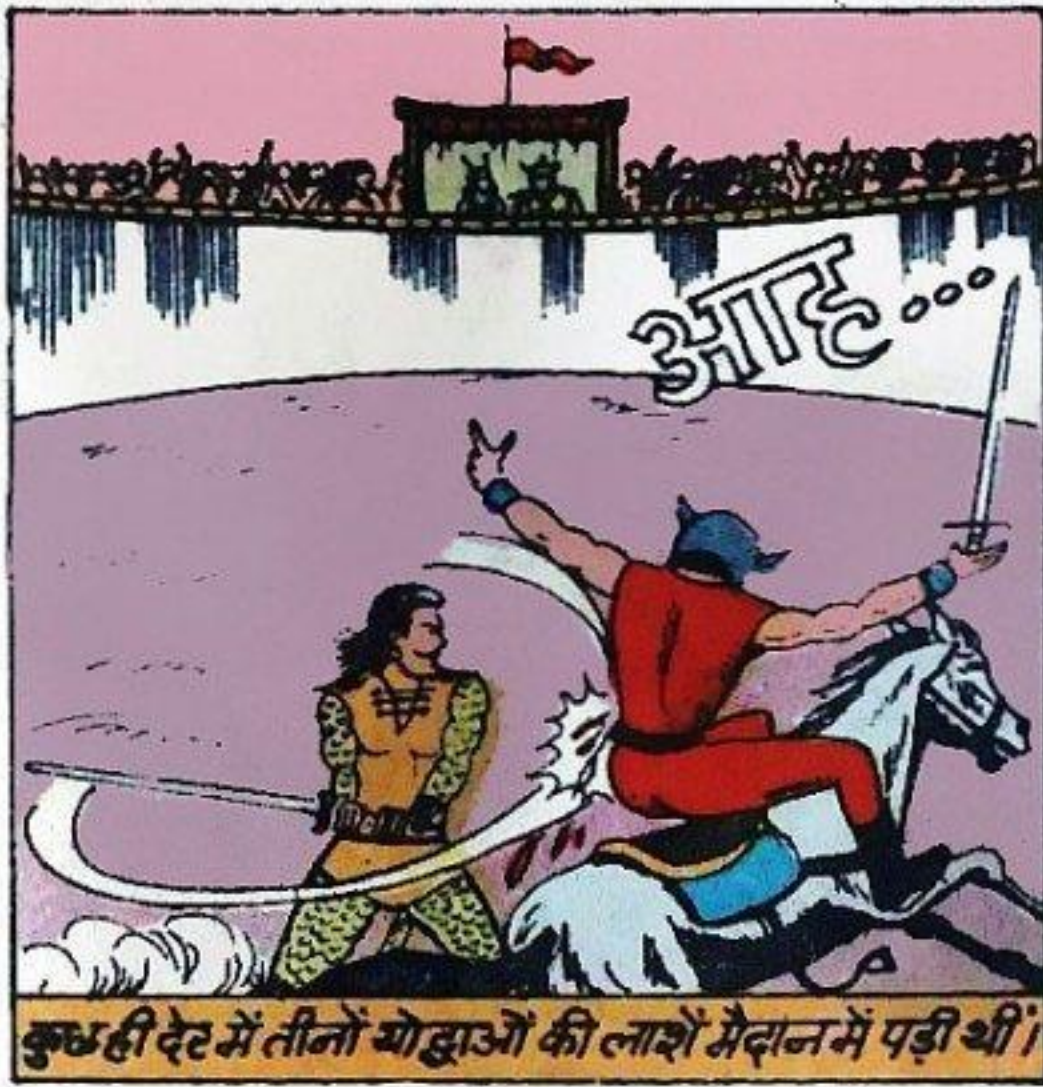
...वह हाथी हवा में तैरता हुआ खेल मैदान के बाहर जा गिरा।
ओह!

इससे पहले कि शेरबाज सम्भल पाता, दूसरा हाथी उसके करीब पहुंच गया और—
तो तुम भी मरना चाहते हो।
चीं... चीं...

ठाक!
तो लो।

धड़ाक!
चीं... चीं...
चीं... चीं...
पंच हाथियों और दस सिंहों की शक्ति रखने वाले शेरबाज के शक्तिशाली प्रहारों को वह हाथी सह नहीं सका और धराशायी होकर दम तोड़ गया।
हुर्रे... हुर्रे...!
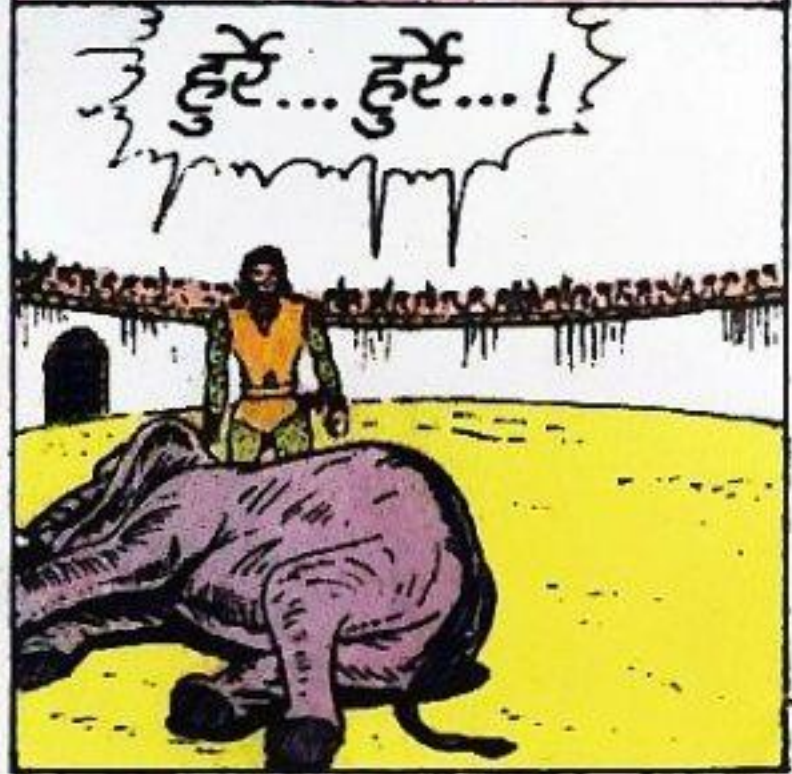
रानी साहिबा! मेरी मौत के ये परवाने भी अपनी मौत को प्यारे हो गये...

...तुम्हारी ओर से मेरे लिये मौत का कोई और पैगाम।
त... तुम...

...तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम मुझे चुनौती दो और मेरी शक्ति का उपहास उड़ाओ...

...अरे मूर्ख, अभी तुम मेरी अपरिचित शक्तियों से परिचित नहीं हो। मैं तुम्हें पलक झपकते ही मिट्टी में मिला दूंगी।
कोरी भपकी देने से कोई फायदा नहीं रानी जी...

...जो तुम कहती हो, उसे करके दिखाओ तो मानूं।
हुम्म! तो यह बात है...

...तो लो, मैं स्वयं ही तुमसे मुकाबला करने आ रही हूं। देखती हूं अब तुम कैसे बचते हो?
इसे मारना आसान नहीं। मुझे तुरन्त राजगुरु से मानस तरंगों द्वारा सम्पर्क करके इसकी मौत का राज जानना चाहिए।

शेरबाज ने तेजी से अपनी आंखें बन्द की और मानस तरंगों द्वारा राजगुरु चिंतामणि से सम्पर्क करने की कोशिश करने लगा।
गुरुदेव! मैं इस समय खतरे में हूं। कृपया मुझे जल्द सुझाइये कि रानी जैतूला को मारने के लिए मुझे क्या उपाय करना चाहिए?

जल्दी ही—
शेरबाज! मैं तुम्हें रानी जैतूला की मौत का कारण बताना भूल गया था...

...खैर, अब ध्यान से सुनो। जैतूला के गले में एक मणि हार है। उसी की शक्ति से वह अपने आपको अजर-अमर कहती है...

...और वास्तव में उस मणि हार के रहते उसे कोई नहीं मार सकता। यदि तुम किसी तरह उसे प्राप्त कर लो तो फिर उसे आसानी से मार सकते हो।
ओह!

तभी जैतूला उसके सामने आ खड़ी हुई।
अब मरने के लिए तैयार हो जा मूर्ख।
यदि मैं इससे सर्प बनकर लड़ूं तो जल्दी से वह मणि हार प्राप्त कर सकता हूं।

अगले ही पल शेरबाज ने सर्प का रूप धारण कर लिया।
अरी मूर्ख स्त्री! तू मुझे क्या मारेगी। हां, मैं तुझ जैसी नागिन का सिर कुचलना अच्छी तरह से जानता हूं।
अच्छा, तो तुम यह समझते हो कि तुम यह शरीर धारण कर मेरे हाथों बच जाओगे...

...तो लो, मैं भी नागिन के रूप में आ गई। अब देखती हूं, तुम बचकर कहां जाते हो?
फों...फों...फों! तो आओ, हो जाये मुकाबला! फैसला अभी हो जायेगा।

फिर दोनों में युद्ध आरम्भ हो गया।

अब किसी तरह इससे लिपट जाऊं, तभी मणि हार हासिल कर सकूंगा।
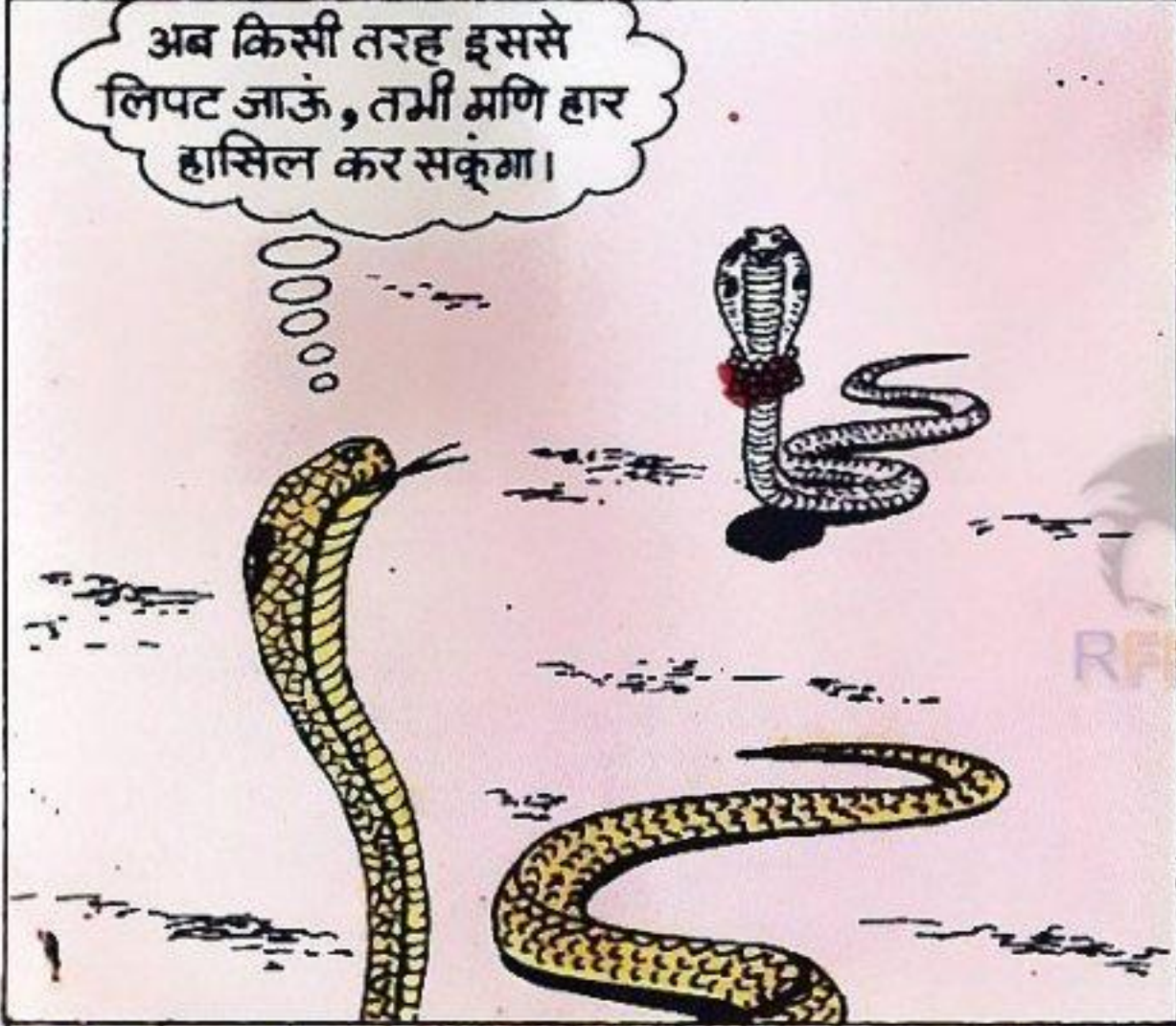
और मौका पाकर—
छोड़ो मुझे... छोड़ो! यह क्या बेहूदापन है?
हा-हा-हा! खफा क्यों हो रही हो रानी जी! मैं तो तुम्हें प्यार कर रहा हूं।
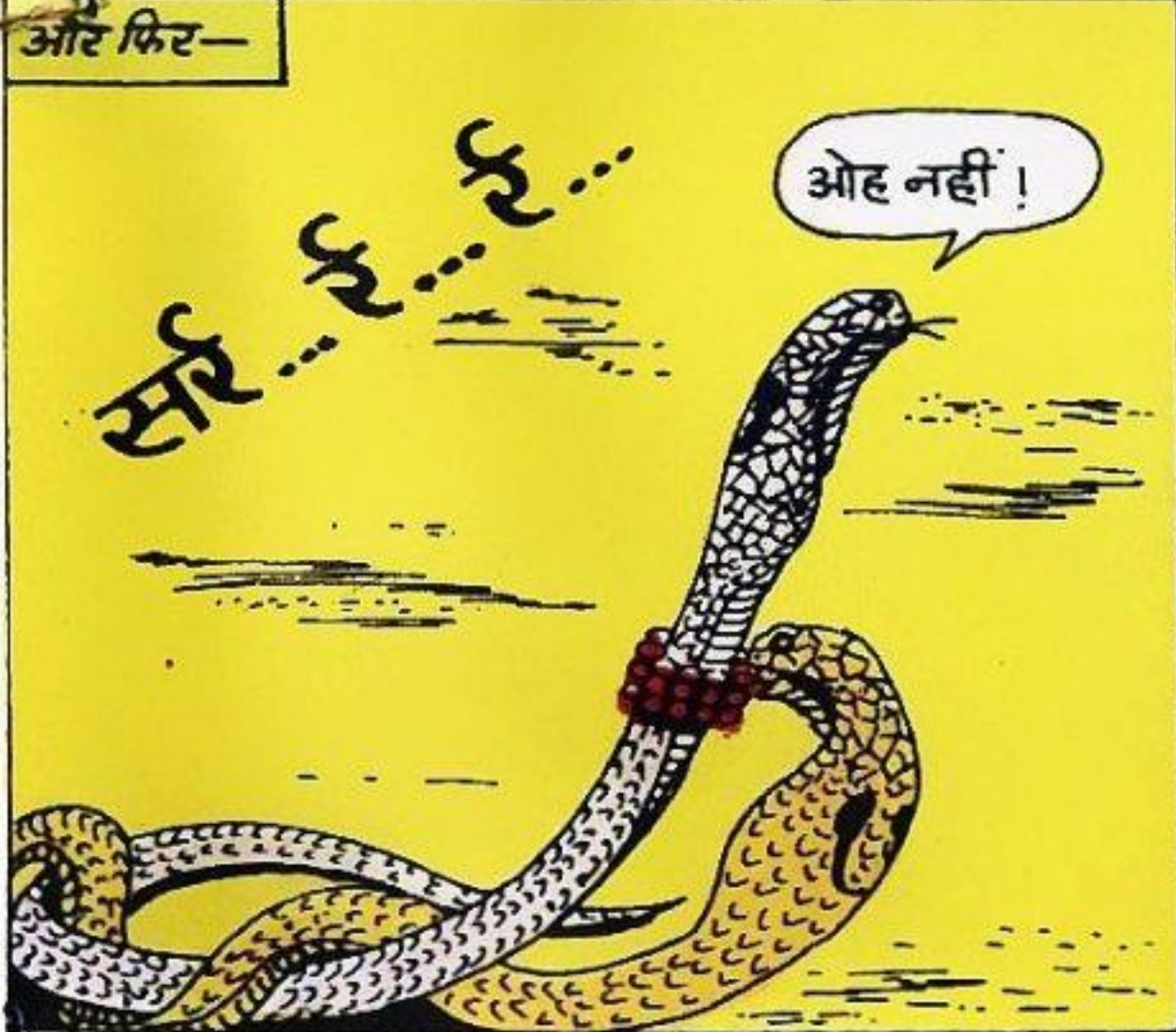
और फिर—
सर्र... र्र... र्र...
ओह नहीं!

हा-हा-हा! रानी जैतूला, तुम्हारी अजर-अमर शक्ति, यानी जीवनलीला अब मेरे हाथ में है। अतः अब तुम मरने के लिए तैयार हो जाओ।
नहीं, तुम मुझे नहीं मार सकते...

शेरबाज ने अपनी तलवार इतनी तेजी और फुर्ती से जैतूला पर फेंकी थी कि उसे कुछ भी करने का मौका नहीं मिला और —

आई... ई... ई...।

रानी जैतूला धरती पर गिरकर निष्प्राण हो गई। चूंकि वह अपने राज्य में भी काफी क्रूर और अत्याचारिणी थी, इसलिए वहां की प्रजा उसकी मौत के साथ ही प्रसन्नता से शेरबाज की जय-जयकार कर उठी।
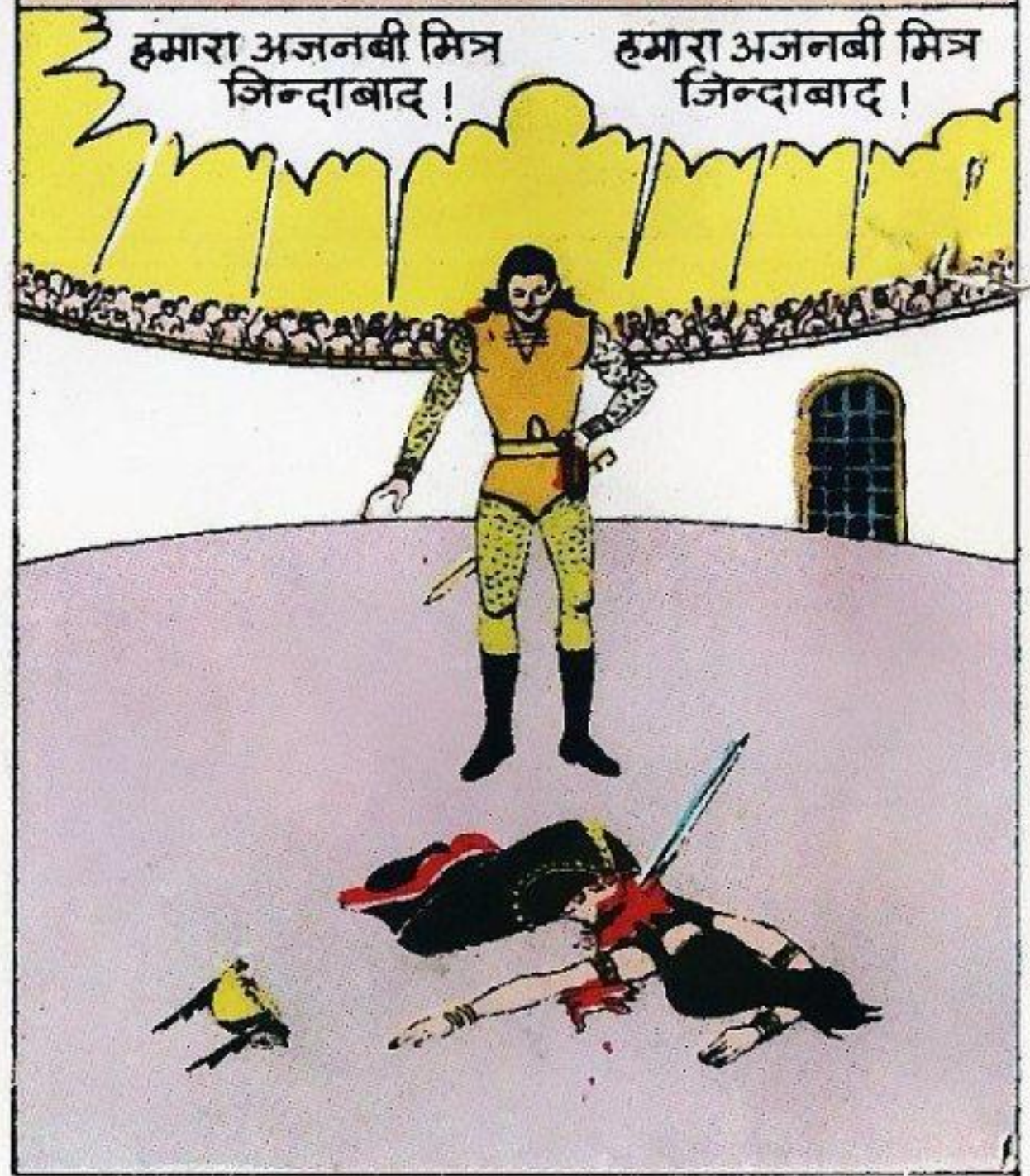
सर्वप्रथम शेरबाज ने रानी जैतूला की कालिया मशान समेत समस्त मायावी, जादुई व शैतानी शक्तियां नष्ट कर दीं, फिर एक समारोह के बाद उसने अस्तदेश की बागडोर वहीं के एक बहादुर, नेक और बुद्धिमान इंसान शुभकोम के हवाले कर दी।
मुझे विश्वास है मित्र कि तुम सर्पलोक से हमेशा मैत्रिक सम्बन्ध बनाये रखोगे।
निःसंदेह मित्र। मुझे तुम्हारे देश की मित्रता पर हमेशा नाज रहेगा।
उसके बाद जब शेरबाज अपने उद्देश्य में सफल होकर सर्पलोक पहुंचा तो राजगुरु चिन्तामणि ने प्रसन्नता से विभोर होकर उसे गले लगा लिया।
राजकुमार शेरबाज जिन्दाबाद!
तुमने हम पर जो उपकार किया है, हम सर्पलोक वासी उसे हमेशा याद रखेंगे शेरबाज!
राजगुरु जी! मुझे जिस उद्देश्य से यहां लाया गया था, उसे मैंने पूरा कर दिया है। अब कृपया मुझे मेरे वर्तमान नये शरीर में पहुंचा दीजिए। मेरे मित्र मेरी चिंता कर रहे होंगे।
अवश्य!
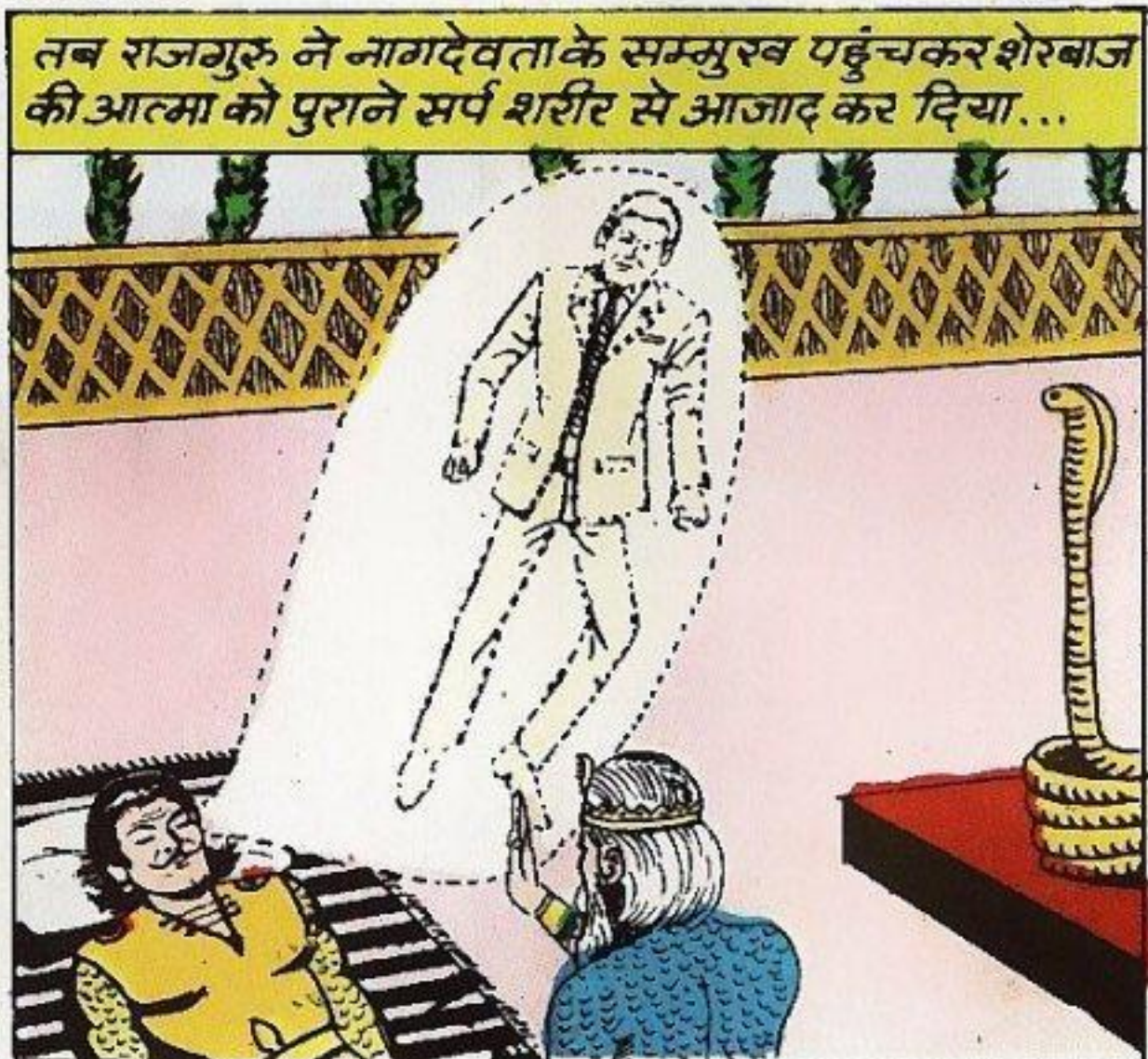
बेटे कमलकांत! शेरबाज को तुम जिस तरह लाये थे, उसी तरह अब इन्हें इनके नये शरीर में पहुंचाने की जिम्मेदारी तुम्हारी है।
जो आज्ञा राजगुरु जी!
तब राजगुरु ने नागदेवता के सम्मुख पहुंचकर शेरबाज की आत्मा को पुराने सर्प शरीर से आजाद कर दिया...
...और कमलकांत शेरबाज की आत्मा को लेकर पृथ्वी की ओर उड़ चला...
...इधर शेरबाज के घर पक्षी विहार में—
आज शेरबाज के मृत शरीर को सुरक्षित रखे पूरे छः दिन बीत चुके हैं, लेकिन इसके जीवित होने के आसार अब भी नहीं दिखाई देते।

तभी—
अब वह वक्त आ गया है दोस्तो!
ओह! तुम!

हां मैं... मैं शेरबाज की आत्मा उसके इस शरीर में वापस लौटाने आया हूं। देवता की कृपा से हमारा वह कार्य पूरा हो गया है, जिसके लिये मैं आपके परम प्रिय मित्र की आत्मा को ले गया था।
ओह! तब जल्दी करो भाई!
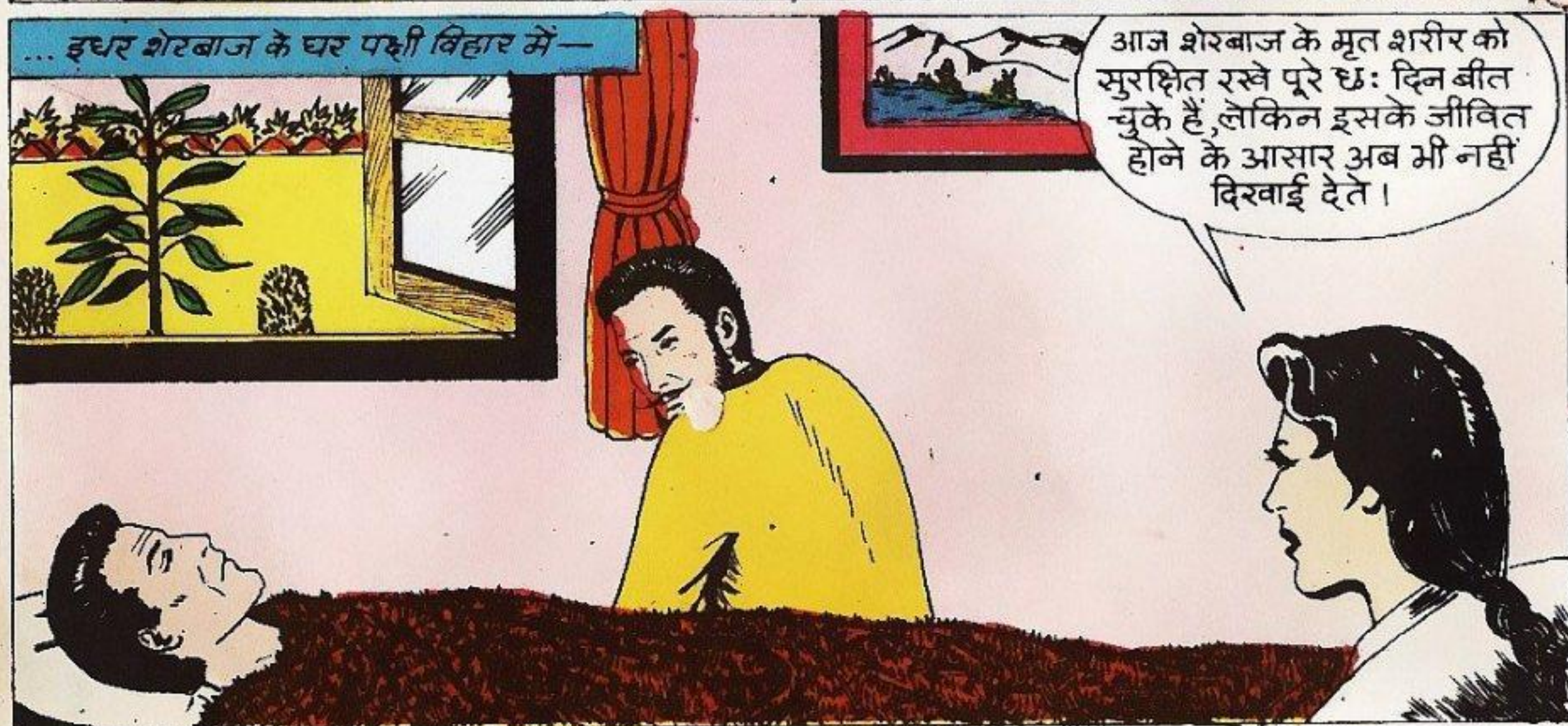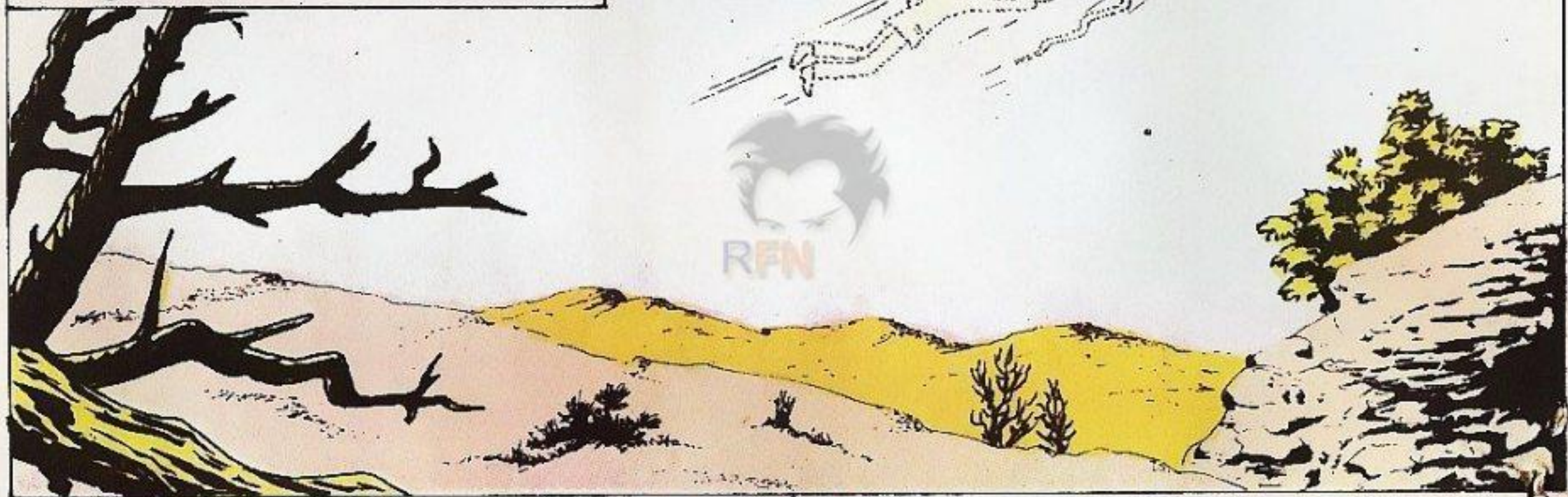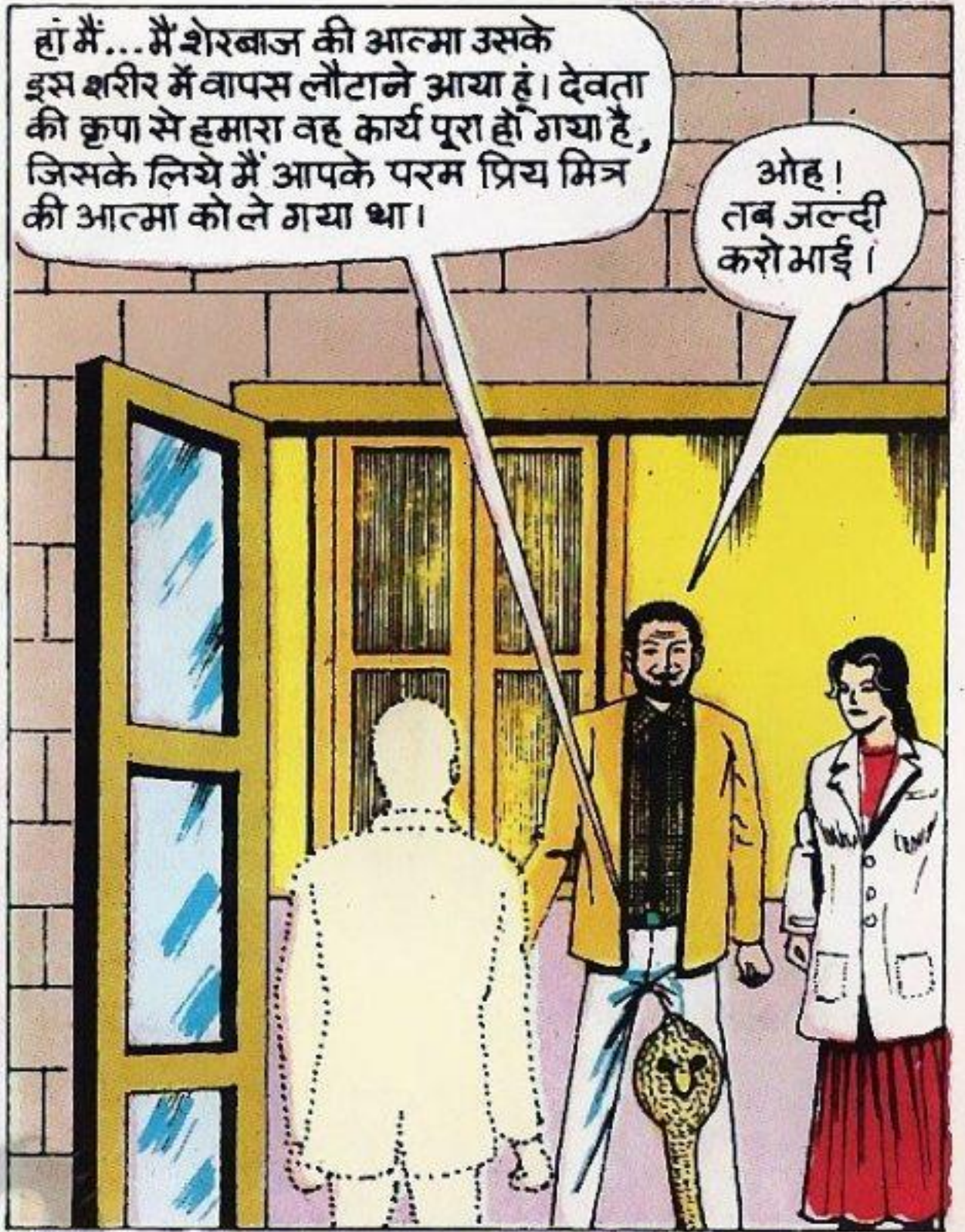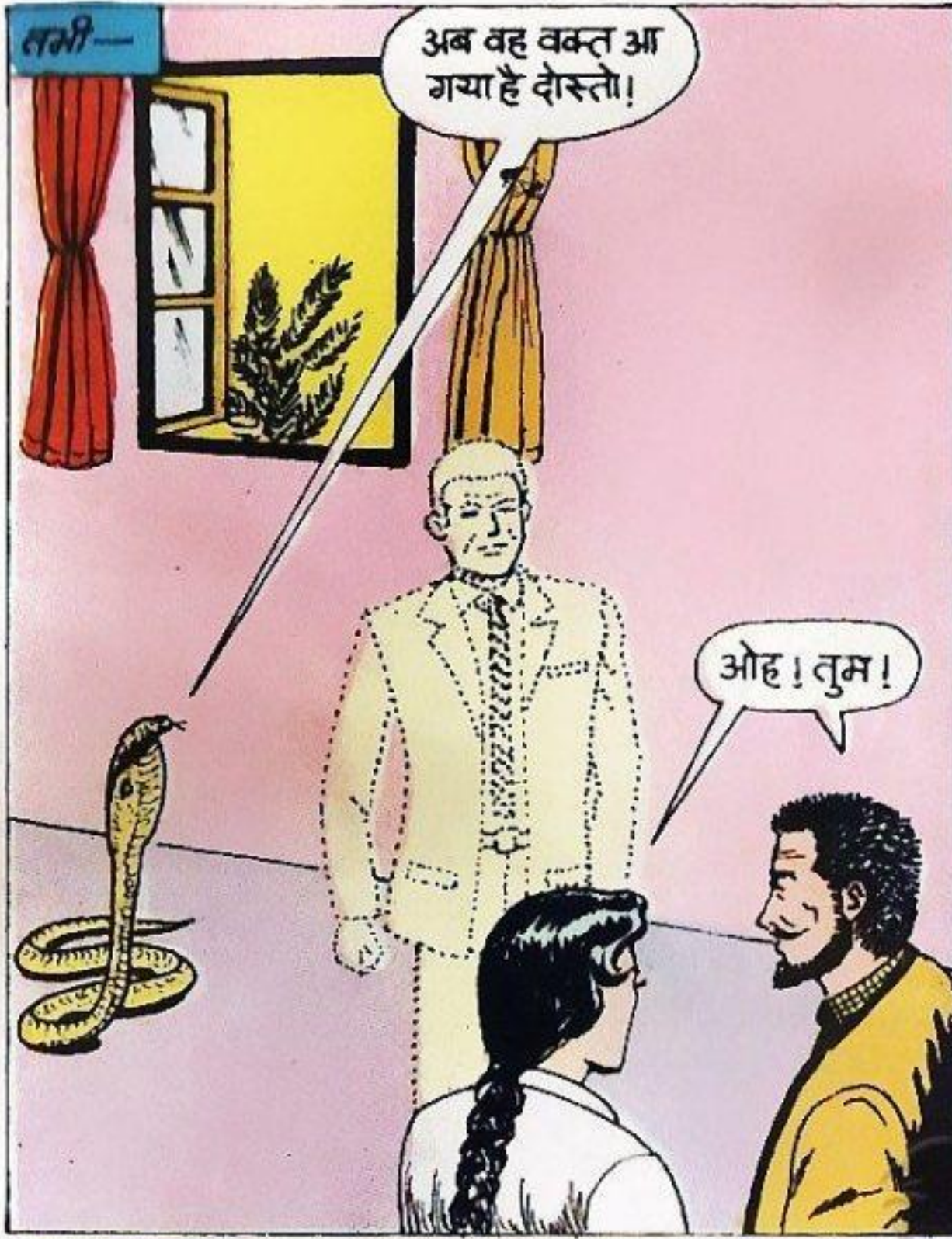
तब कमलकांत ने जिस तरह शेरबाज की आत्मा को उसके शरीर से बाहर निकाला था, उसी तरह उसमें प्रवेश करा दिया।

अगले ही पल शेरबाज जीवित होकर उठ बैठा।
आहा! शेरबाज!
रोमा... दिलावर!

उसके जाने के बाद जब शेरबाज ने रोमा और दिलावर को सारी घटना विस्तारपूर्वक बताई तो जहां दिलावर हैरानी के अथाह सागर में गोते खाने लगा, वहीं रोमा के कोमल हृदय में प्यार का एक सुन्दर-सा फूल खिल उठा।

समाप्त